B.A.(Education),part-I,paper-II,
Presented by Dr.Pallavi,
Topic- मध्य काल में हिन्दू शिक्षा (Education for Hindu During Medieval period)

5.11 मध्यकाल में हिन्दू शिक्षा (Education for Hindu During Medieval Period)

5.11:1 मध्यकालीन भारत में हिन्दू शिक्षा व्यवस्था की मुख्य विशेषताएँ

1. राज्य की सहायता का न होना-भारत में मुस्लिम शासकों के आते ही हिन्दू शिक्षा व्यवस्था के लिए राज्य सहायता लगभग समाप्त हो गयी। यही नहीं, कई स्थानों पर इस व्यवस्था को नष्ट करने के प्रयास भी हुए। । हिन्दू शिक्षा व्यवस्था उन धनी लोगों, विद्वानों तथा ग्रामीण समुदाय पर आश्रित थी जहाँ पर मुस्लिम शासक नहीं थे, वहां पर हिन्दू शिक्षा व्यवस्था को राज्य से संरक्षण मिला। परन्तु इस प्रकार बहुत कम क्षेत्र थे।

2. धर्म अभिमुखता-शिक्षा-प्राय: समस्त शिक्षा धर्म-प्रधान थी।

3. पाठशालाएँ-प्राथमिक शिक्षा पाठशालाओं में दी जाती थी। ये पाठशालाएं ग्रामीण तथा शहरी दोनों क्षेत्रों में थीं। ये पाठशालाएँ एकल प्रबन्धन राजे, महाराजे घनी या मंदिरों के द्वारा की जाती थी। पाठशाला किसी मकान के बरामदे अथवा वृक्ष की छाया में लगती थी। कई स्थानों पर पाठशालाओं के अलग से भवन भी थे। मन्दिरों में भी पाठशालाएं स्थापित की गयी थों । छात्रों से किसी प्रकार की फीस नहीं ली जाती थी। अभिभावक अध्यापकों को उपहार दिया करते थे। छात्र अघ्यापकों की व्यक्तिगत सेवा 1. भी किया करते थे। कभी कभी अध्यापक अपने निर्वाह के लिए अंशकालिक अन्य कार्य भी करते थे। चन्दा के द्वारा भी पाठशाला का खर्च चलता था।

4. उच्च शिक्षा केन्द्र-मध्यकालीन भारत में प्राचीन काल की भाँति हिन्दुओं के उच्च शिक्षा केन्द्र भो थे। परन्तु सामान्यतः वे घीरे-धीरे नष्ट कर दिये गये । दक्षिण भारत में ये केन्द्र अपनी ख्याति रख सके क्योंकि काफी समय तक मुस्लिम शासकों के अधीन ये क्षेत्र न आ पाये।

5.11.2 प्राथमिक स्तर पर हिन्दू शिक्षा व्यवस्था को मुख्य विशेषताएँ मध्यकालीन भारत में हिन्दू शिक्षा व्यवस्था में प्राथमिक शिक्षा स्तर को निम्न विशेषताएं थी -

1. हिन्दू बच्चों की शिक्षा 'उपनयन' संस्कार के पश्चात् शुरु होती थी।

2. प्राथमिक पाठशाला गाँवों तथा शहरों दोनों में थीं।

3. प्राथमिक कक्षाओं प्राय: पेड़ों की छाया में, घर के बरामदे तथा मन्दिरों में लगा करती थो। कई स्थानों पर जहाँ सम्पन्न लोग थे पर अलग से भवन भी थे।

4. छात्रों को पढ़ना-लिखना, गणित तथा वहीखाते की शिक्षा दी जाती थी।

5. पाठशालाओं में मुख्य रूप से कायस्थ जाति के शिक्षक पढ़ाते थे। परन्तु अन्य जातियों के शिक्षक भी अध्यापन कार्य करते थे।

6. छात्रों से नियमित रूप से फीस नहीं ली जाती थीं। अभिभावक सहर्ष अपनी इच्छा से उत्सवों पर अध्यापकों को उपहार, नगद या अनाज और वस्तु देते थे।

7. जो अध्यापक धन के लिए पढ़ाते थे उनका सामाजिक बहिष्कार किया जाता था कम आय होने के कारण अनेक अध्यापक अंशकालिक कार्य जैसे खेती तथा व्यापार आदि भी करते थे।

8. शूद्रों (अनुसूचित जातियों) के बच्चे भी कई स्थानों पर पाठशालाओं में पढ़ने के लिए जाया करते थे।

9. प्राथमिक शिक्षा प्रायः व्यवहारिक थी।

10. प्राय: नैतिक शिक्षा नहीं दी जाती थी।

11. नाप-तौल का ज्ञान छात्रों को अनिवार्य रूप से दिया जाता था।

12. उन दिनों में कंवल स्लेट या तख्ती को लिखने के लिए प्रयोग किया जाता था।

13. अच्छी लिखाई पर विशेष बल दिया जाता था।

14. स्कूलों में प्रादेशिक भाषाएँ शिक्षा का माध्यम था।

15. छात्र प्रायः प्रात:काल से सायंकाल अध्ययन करते थे।

16, नायक प्रथा (Monitor System) प्रचलित थी।

5.11.3 शिक्षण-अधिगम विधि

प्राथमिक स्कूलों में प्राय: निर्देशन की चार अवस्थाएँ अथवा चरण थे ।
पहली अवस्था-छात्रों को रेत पर अक्षरों का लिखना सिखाया जाता था।
दूसरी अवस्था -दूसरी अवस्था पर ताड़ के पत्तों पर अध्यापक द्वारा अक्षर लिखो जाते ये। छात्र उन पर सरकंडे के कलम से तथा कोयले की स्याही से ट्रेस करते थे जिसे सुगमता से मिटाया जा सकता था। इसके पश्चात् छात्र संयुक्त व्यंजनों का उच्चारण करते थे। छात्रों को स्वर व्यंजनों के जोड़ने (सन्धि) का अभ्यास कराया जाता था।

तीसरी अवस्था-सरकण्डे का स्थान केले के ने से लिया अब छात्रों को बाक्य बनान सीखाया जाता था। बोलचाल की भाषा तथा लिखित भाषा का अन्तर छात्रों को सिखाया जाता था। तय छात्रों को अंकगणित के नियम बताए जाते थे ।

प्रातः तथा सायं छात्रों की पहाड़े कंठस्थ कराये जाते थे। तत्पश्चात् छात्रों को व्यापार तथा खती का हिसाब-किताब (लेखा रखना) सिखाया जाता था अधिक पहाड़ों को कंठस्थ करने वाले छात्र तेजस्वी माने जाते थे।

चौथी अवस्था-इस अवस्था पर छात्रों को ऊचे स्तर के बही खातों को जानकारी दो जाती थी। अर्जी लिखना तथा व्यवसायिक पत्र-लेखन की शिक्षा दी जाती थी। छात्रों को रामायण पढ़ायो जाती थी। उत्तर भारत में मुख्यत: यह

पाठ्यपुस्तक थी। अकबर बादशाह के शासन में इसका स्थान तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरित मानस' ने ले लिया।

भाषा के साथ-साथ गणित का शिक्षण भी दिया जाता था हिन्दू बच्चों का इस विषय पर बहुतअधिकार था अर्थात इसका बहुत जान था। अकबर के समय राजा टोडरमल की ख्याति गणित में बहुत अधिक थी।

हिन्दुओं तथा मुसलमानों के प्राथमिक स्कूल

हिन्दुओं के प्राथमिक स्कूल देशी भाषायी तथा व्यापारिक थे जबकि मुस्लिम स्कूल प्राय: धर्म और इस्लाम दर्शन पर आधारित थे। मुस्लिम स्कूलों में पढ़ना पहले सिखाया जाता था हिन्दू स्कूलों में पहले लिखना तथा बाद में पढ़ना।

फारसी भाषा का ज्ञान-मुस्लिम शासनकाल में राज्य का सारा कामकाज फारसी भाषा में होता था। फारसी जानने वालों को ही सरकारी नौकरी मिल सकती थी। फारसी स्कूलों में प्रायः मुस्लिम शिक्षक होते थे। हिन्दू भी फारसी स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करते थे । पंजाब कब्जे में आ गया तो अनेक पंजाबी विद्वानों ने कश्मीर में शरण ली। कहा जाता है कि जिन स्त्रियों ने शिक्षा प्राप्त की वे संस्कृत तथा प्राकृत भाषा बोल सकते थे। अनेक ब्राह्मण कश्मीर घाटी में बस गये। उन्होंने वैदिक पांडित्य की परम्परा को बनाये रखा।

कश्मीर में जैनुल आबिदीन 14201470 ई०) शासक बहुत उदारवादी था। उसने पूर्व शासक सिकन्दर शाह 1389-1413 के हिन्दुओं के विरूद्ध जारी किये गये सभी आदेशों को बदल दिया । हिन्दुओं के पुस्तकालयों को अनुदान दिया। सुलतान को फारसी कश्मीरी, संस्कृत तथ तिब्बती का अच्छा ज्ञान था। वह विद्वानों का संरक्षक था। महाभारत कथा राजतरंगिणी का फारसी में अनुवाद करवाया ।

बनारस (काशी)-काशी प्राचीनकाल से ही हिन्दू शिक्षा, संस्कृति तथा दर्शन का प्रसिद्ध केन्द्र रहा है। अबुल फजल के के अनुसार भारत के अनेक भागों से शिक्षार्थी वहाँ आया करते थे। भारत में मुस्लिम शासन स्थापित होने पर अनेक विद्वान बनारस छोड़कर दक्षिण भारत में चले गये। इस कारण शिक्षा को बहुत धक्का लगा। परन्तु अकबर बादशाह के काल में पुन: यह उच्च शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र बना। भारत के कोने कोने से छात्रों का यहाँ आना आरम्भ हुआ। दक्षिण भारत से पुन: विद्वान यहाँ पर आकर बसे । परन्तु औरंगजेब बादशाह के शासनकाल में दोबारा बुरे दिन आए।

अकबर के शासनकाल में संत कबीर तथा संत तुलसीदास अपनी साहित्यिक रचनाएँ बनारस में की। राजा जयसिंह ने राजकुमारों की शिक्षा के लिए जहां एक कॉलंज स्थापित किया। बनियर ने मध्यकालीन बनारस को तुलना यूनान के एथेंस से की है ।

मिथिला-प्राचीन काल से ही मिथिला शिक्षा का केन्द्र रहा है। सम्राट अकबर ने यहां के विद्वानों को बहुत संरक्षण प्रदान किया। यहाँ के ख्याति प्राप्त विद्वान रघुनन्दनदास को पॉडित्य से इतने प्रभावित हुए कि मिथिला नगरी उपहार के रूप में उन्हें दे दी । परन्तु उन्होंने इसे स्वयं न लेकर अपने गुरु को सौंप दी।

मिथिला के विद्वानों को स्थानीय सरकार का संरक्षण प्राप्त था। 16वीं शताब्दी में यह नगर धार्मिक तथा लौकिक ज्ञान का केन्द्र बना ।

नदिया-बंगाल के सेन वंश के राजाओं ने 1063 ई० इस नगर की स्थापना की। लगभग 150 वर्ष तक यह उच्च शिक्षा का केन्द्र बना रहा। यहाँ पर अनेक शैक्षिक संस्थाएँ थे तथा इनमें शिक्षा पाने के लिए छात्र तथा विद्वान आते

थे। उच्च शिक्षा संस्थान 'टोल' के नाम से जानी जाती थी। जहाँ पर बड़े -बड़े भवन नहीं थे। मिट्टी से बने कुटीर थे। जिनमें छात्र रहते थे।

यह शिक्षा केन्द्र न्याय शास्त्र की शिक्षा के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध था। शिक्षण में वाद-विवाद पद्धति को प्रमुख स्थान दिया जाता था। शिक्षा के तीन प्रसिद्ध केन्द्र यहाँ पर इस प्रकार थे-नवद्वीप, गोपाल पाड़ा तथा शांतिपुर।

एक कॉलेज में लगभग 25 छात्र थे।

13वीं तथा 14वीं शताब्दी में इसकी ख्याति को बहुत धक्का पहुँचा। अकबर तथा शाहजहाँ के काल में पुनः यह प्रसिद्ध हुआ। यहाँ पर निम्न विषय पढ़ाए जाते थे।

तर्क, विधि, काव्य, ज्योतिष शास्त्र, व्याकरण, न्यायशास्त्र, नक्षत्र शास्त्र, अलंकारशास्त्र, दर्शन, कोश विज्ञान, भगवत् गीता तथा अन्य हिन्दू धर्मग्रन्थ भी यहाँ पढ़ाए जाते थे। इन स्कूलों में विषय इस प्रकार थे -'फारसी, व्याकरण, पत्रव्यवहार पद्धति तथा प्रसिद्ध कहानियाँ तथा कविता। धर्म की शिक्षा भो अनिवार्य रूप से दी जाती थी।

5.11.4 हिन्दू शिक्षा व्यवस्था के प्राथमिक स्कूलों के प्रकार

हिन्दुओं के प्राथमिक स्कूल निम्न प्रकार से स्थापित हुए -
1. हिन्दू स्कूल मन्दिरों में लगते थे अथवा उनसे संबंधित थे।

2. कुछ प्राथमिक स्कूल ग्रामों के जमींदारों अथवा धनी लोगों के सौजन्य से स्थापित थे ।वे अपने बच्चों की शिक्षा में रुचि रखते थे । अतः स्कूल स्थापित करते थे जिनमें अन्य बच्चे भी शिक्षा प्राप्त करते थे।

3. दान की प्रवृत्ति के कारण दानी सज्जन स्कूल स्थापित करते थे।

4. कुछ स्कूल व्यापारिक दृष्टिकोण से भो उद्यमी व्यक्ति स्थापित करते थे।

5. एक अन्य प्रकार के प्राथमिक स्कूल थे. जिन्हें 'महाजनी स्कूल' कहा जाता था महाजनी स्कूल व्यापारियों ने अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिए स्थापित किये। इनमें प्राय: बही-खाते से संबंधित तथ्यों की शिक्षा दी जाती थी ।बच्चों को व्यापार के लिए तैयार किया जाता था।

6. विद्यादायिनी माँ सरस्वती (Goddess of Learning) के अभिवादन की प्रार्थना छात्रों कंठस्थ करायी जाती थी।

7. शिक्षकों का छात्र बहुत मान करते थे। एक प्रकार से उनकी पूजा की जाती थी। उनकी 'चरण वंदना' की जाती थी ।

5.11.5 अनुशासन

अनुशासन बहुत कठोर था। कोर्ट की अवहेलना करने पर छात्रों के स्कूल-समय के बाद ठहराया जाता था। किसी भी पाठ को बार-बार लिखने के लिए कहा जाता था। चांटे मारे जाते थे । जांध के नीचे दोनों हाथों में कान पकड़ कर

घुटनों के बल बैठाया जाता था डण्डे से छात्रों की पिटाई की जाती थी। यह ध्यान रखा जाता था कि छात्रों को शारीरिक क्षति नहीं हो।

छात्र अध्यापक संबंध-स्कूलों में छात्र-अध्यापक सम्बन्ध बहुत निकट के थे बालकों को अध्यापक अपनी सन्तान समझ कर उसकी देखभाल करते थे छात्र भी अध्यापकों को पिता तुल्य मानते थे छात्रों के परस्पर सम्बन्ध भी बहुत मधुर थे।

5.11.6 मध्यकालीन भारत में हिन्दुओं की उच्च शिक्षा के प्रमुख केन्द्र

यह अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि कई मुस्लिम आक्रमणकारियों ने संसार में ख्याति प्राप्त उच्च शिक्षा के केन्द्र नष्ट कर दिये । सैकड़ों मूल्यवान पाण्डुलिपियाँ भस्म कर दी गयो। इस प्रकार समृद्ध बौद्धिक विरासत को धूल में मिला दिया। फिर भी कुछ शैक्षिक संस्थान इस बरबरता से बचे रहे। इनका संक्षेप में विवरण दिया जा रहा है।

कश्मीर-11वों ई० शताब्दी के आरम्भ में जब पंजाब प्रांत मुस्लिम शासकों के यह पर निम्न जातियों को शिक्षा ग्रहण का पूरा-पूरा अवसर दिया जाता था। विद्वानों में विभिन्न विषयों पर वाद विवाद हुआ करता था।

अंबेर (जयपुर)-18वीं शताब्दी में अंदर (राजस्थान) के राजा सवाई जयसिंह 16991743 ई०) ने शिक्षा तथा विज्ञान के क्षेत्र में अत्यन्त उत्कृष्ट कार्य किया। उन्होंने लगभग 44 वर्ष की लंबी अवधि तक राज करके एक कीर्तिमान स्थापित किया। वह एक महान खगोलशास्त्री, निर्माता इंजीनियर विधिवेत्ता,
समाज सुधारक तथा कुशल राजनेता था ।

अपने काल में उसने एक विज्ञान-पुरुष' के रूप में अपनी पहचान बनाई जब भारतवासी वैज्ञानिक शिक्षा और प्रगति से बेखबर थे।

जयसिंह ने दिल्ली, जयपुर, मथुरा, उज्जैन तथा वाराणसी में वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित खगोलशास्त्रीय वेधशालाओं का निर्माण करवाया।
खगोल शिक्षा के अध्ययन के लिए उसने सारणियों का एक सेट तैयार किया, जिसे जिजमुहम्मद शाही कहते हैं ।
इन वेधशाला को 'जन्तर-मन्तर' के नाम से जाना जाता है।

जयसिंह ने जयपुर नगर को, जिसकी उसने स्थापना की उसको कला तथा विज्ञान का एक महान केन्द्र बना दिया।

जयसिंह एक महान साहित्यिक विभूति था । उसने विज्ञान तथा गणित को एक महत्वपूर्ण रचनाओं को संस्कृत में अनुवाद कराया। उनमें से प्रमुख थे-यूक्लिड (Euclid) की 'Elements of Geometry' तथा नेपियर (Napier) के लघुगणक (Logarithms) का निर्माण ।

5.11.7 दक्षिण भारत में शिक्षा का विकास

विजय नगर साम्राज्य-विजय नगर साम्राज्य में हिन्दू धर्म, दर्शन, व्याकरण, नृत्य, संगीत आदि पर उत्कृष्ट कृतियों को रचना हुई । शासकों ने संस्कृत, तमिल, तेलुगु और कन्नड़ साहित्य और भाषाओं को प्रोत्साहन दिया। कहा जाता है कि कृष्णदेव राय (1509-29 ई०) के शासनकाल में "दक्षिण भारत के साहित्यिक इतिहास में एक नए अध्याय का शुभारंभ हुआ।" वह स्वयं एक महान विद्वान या । इस काल में वास्तुकला में भी बहुत प्रगति हुई। भव्य मन्दिरों का निर्माण हुआ ।

चोल प्रशासन-10वीं तथा 11वीं शताब्दी ई० में चौथ प्रशासन में शिक्षा के सभी क्षेत्रों में बहुत प्रगति हुई। इसे तमिल साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है।

पंपा (10वीं शताब्दी) को प्रायः कन्नड़ का आदि कवि' कहा जाता है। संत कवि दो महाकाव्यों को रचना की। एक 'आदिपुराण' जो पहले जैन, तीर्थंकर के जीवन से (।।वीं शताब्दी) ने महाभारत के एक भाग को तेलगू कविता में लिखा। ये सारी कृतियाँ इस बात को प्रमाणित करती हैं कि यहाँ शिक्षा का कितना प्रसार था।

तिरूमुककुदल मन्दिर कॉलेज (Tirumukkudal Temple College)-11वौं शताब्दी में वेनकेटेसरा पेरूमल मन्दिर जिला चिंगलेपुट (Chingleput) बहुत प्रसिद्ध था। यह मन्दिर एक कॉलेज छात्रावास तथा कॉलेज चलाता था। 60 छात्रों के रहने तथा खानपान की यहाँ व्यवस्था थी। 60 छात्रों की विषयवार संख्या इस प्रकार थी 10 ऋग्वेद के छात्र, 10 यजुर्वेद के, 20 व्याकरण, 16 संचारतण, 3 शैशवागमा तथा 7 वानप्रस्थ और संन्यास के लिए । सभी परिवार को छात्रों के लिए तेल लगान का कार्यक्रम रहता था और इसकी व्यवस्था विद्यालय के ओर से की जाती थी।

तिरुवारियुर मन्दिर कॉलेज चिंगनापटु जिला में अवस्थित था। सुप्रसिद्ध व्याकरण के विद्वान, ज्ञाता और रचयित्ता पाणिनी की स्मृति में यह महाविद्यालय बनाया गया था प्राय: 400 छात्र यहाँ पर पढ़ते थे और लगभग आधे लोगों का खर्च मन्दिर के द्वारा वहन किया जाता था और उन्हें शिक्षा मुफ्त दी जाती थी।

समी शासक अपनी सुविधानुसार या अपनी सांस्कृतिक विरासत को ध्यान में उनके द्वारा शासित राज्यों में शिक्षा व्यवस्था कायम करते हैं। इस देश का गौरव नालन्दा, विक्रमशिला आदि विश्वविद्यालयों को जलाया गया और नष्ट किया गया, परन्तु भारत के कुछ आचार्यों ने अपनी विरासत शिक्षा के माध्यम रखा। यही हालत आगे भी देखेंगे जब अंग्रेजों का आगमन हुआ।

5.12 सारांश (Summary)

इस काल में परम्परागत शिक्षा का कुछ हास हुआ। विद्वत् वर्ग प्राचीन शिक्षा पद्धति को येनकेन प्रकार से जीवित रखे। मुस्लिम शिक्षा में कुछ शासकों ने काफी दिलचस्पी दिखायो। एक तरह दो समानान्तर शिक्षा व्यवस्था चलती रही। हिन्दुओं को टोल और पाठशाला और मुसलमानों को मखतब और मदरसा । शेरशाह, अकबर, शाहजहाँ जैसे कुछ शासक पाठशालाओं को भी सहायता प्रदान करते थे।

5.13 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. मध्यकालीन भारत में शिक्षा की व्यवस्था का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

(Give a brief account of the organisation of education in medieval India.)

2. मुस्लिम शिक्षा के उद्देश्य और आदर्श क्या थे ? उनका निर्माण भारत के मुस्लिम शासकों के हितों को कहाँ तक ध्यान में रखकर किया गया था? (What were the aims and ideals of Muslim education ? How far were they formulated keeping in view the interests of Muslim rulers of India?) 3. मध्यकालीन भारत में हिन्दू शिक्षा व्यवस्था की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करें। (Describe the main features of Hindu education system in medieval India.)

4. भारत की मुस्लिम कालीन शिक्षा के उद्देश्य और संगठन की विस्तृत विवेचना कीजिए तथा आधुनिक भारतीय शिक्षा के विकास पर इसके प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।